अध्याय 37.

स्वाध्याय

1. **स्वाध्याय किसे कहते हैं ?**

   सत् शास्त्र का पढ़ना, मनन करना या उपदेश देना आदि स्वाध्याय माना जाता है, इसे परम तप कहा है।

2. **स्वाध्याय के कितने भेद हैं ?**

   स्वाध्याय के दो भेद हैं-निश्चय स्वाध्याय और व्यवहार स्वाध्याय।

3. **निश्चय स्वाध्याय किसे कहते हैं ?**

   ज्ञानभावनालस्यत्यागः स्वाध्यायः-आलस्य त्यागकर ज्ञान की आराधना करना निश्चय स्वाध्याय है।

4. **व्यवहार स्वाध्याय किसे कहते हैं ?**

   1. अङ्ग प्रविष्ट और अङ्ग बाह्य आगम की वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और उपदेश करना व्यवहार स्वाध्याय है।
   2. तत्त्वज्ञान को पढ़ना, स्मरण करना आदि व्यवहार स्वाध्याय है।

5. **व्यवहार स्वाध्याय के कितने भेद हैं ?**

   स्वाध्याय के पाँच भेद हैं-

   1. **वाचना** - निर्दोष ग्रन्थ (अक्षर) और अर्थ दोनों को प्रदान करना वाचना स्वाध्याय है।
   2. **पृच्छना** - संशय को दूर करने के लिए अथवा जाने हुए पदार्थ को दृढ़ करने के लिए पूछना सो पृच्छना है। परीक्षा (पढ़ाने वाले की) के लिए या अपना ज्ञान बताने के लिए पूछना, पृच्छना नहीं है। वह तो पढ़ाने वाले का उपहास करना या अपने को ज्ञानी बतलाना है।
   3. **अनुप्रेक्षा** -जाने हुए पदार्थ का बारम्बार चिंतन करना सो अनुप्रेक्षा है। जैसा कि किसी ने कहा है-

      बाटी जली क्यों, पान सड़ा क्यों ?
      घोड़ा अड़ा क्यों, विद्या भूली क्यों ?

      सबका एक ही उत्तर है, पलटा नहीं था।
   4. **आम्नाय** -शुद्ध उच्चारण पूर्वक पाठ को पुनः-पुनः दोहराना आम्नाय स्वाध्याय है और पाठ को याद करना भी आम्नाय है। भक्तामर, णमोकार मंत्र आदि के पाठ इसी में गर्भित हैं।
   5. **धर्मोपदेश**-आत्मकल्याण के लिए, मिथ्यामार्ग व संदेह दूर करने के लिए, पदार्थ का स्वरूप, श्रोताओं में रत्नत्रय की प्राप्ति के लिए धर्म का उपदेश देना धर्मोपदेश है। (तत्त्वार्थसूत्र, 9/25)

6. **कौन-कौन सी गति के जीव स्वाध्याय करते हैं ?**

   मात्र दो गति के जीव स्वाध्याय करते हैं-मनुष्य और देव।

7. **कौन-कौन सी गति के जीव धर्मोपदेश देते हैं ?**

   मनुष्य और देवगति के जीव धर्मोपदेश देते हैं।

8. **कौन-कौन सी गति के जीव धर्मोपदेश सुनते हैं ?**

चारों गतियों के जीव धर्मोपदेश सुनते हैं।

9. क्या नारकी भी धर्मोपदेश सुनते हैं ?

हाँ, सोलहवें स्वर्ग तक के देव तीसरे नरक तक धर्मोपदेश देने जा सकते हैं। जैसे-सीता का जीव लक्ष्मण के जीव को सम्बोधने के लिए तीसरे नरक गया था। (प्रथमानुयोग की अपेक्षा)

10. ज्ञान के कितने अङ्ग हैं परिभाषा बताइए ?

ज्ञान के 8अङ्ग हैं-

1. **व्यञ्जनाचार** - व्याकरण के अनुसार अक्षर, पद, मात्रा का शुद्ध पढ़ना, पढ़ाना व्यञ्जनाचार है।
2. **अर्थाचार** - सही-सही अर्थ समझकर पढ़ना-पढ़ाना अर्थाचार है।
3. **उभयाचार** - शुद्ध शब्द और अर्थ सहित आगम को पढ़ना-पढ़ाना उभयाचार है।
4. **कालाचार** - शास्त्र पढ़ने योग्य काल में ही पढ़ना-पढ़ाना। अयोग्य काल में सूत्र ग्रन्थ (सिद्धान्त ग्रन्थ) पढ़ने का निषेध है। जैसे-नंदीश्वर श्रेष्ठ महिम दिवसों में, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या,पूर्णिमा तीनों संध्याकालों में, अपर रात्रि में, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, उल्कापात आदि में गणधरदेवों द्वारा और ग्यारह अङ्ग, 10 पूर्वधारियों के द्वारा रचित शास्त्र, श्रुतकेवली के द्वारा रचित शास्त्र पढ़ना-पढ़ाना वर्जित है। भावना ग्रन्थ, प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग पढ़ने का निषेध नहीं है।
5. **विनयाचार** -द्रव्य शुद्धि अर्थात् वस्त्र शुद्धि, काय शुद्धि एवं क्षेत्र शुद्धि के साथ विनयपूर्वक पढ़ना-पढ़ाना विनयाचार है।
6. **उपधानाचार** - धारणा सहित आराधना करना, स्मरण सहित स्वाध्याय करना भूलना नहीं अथवा नियम पूर्वक अर्थात् कुछ त्यागकर स्वाध्याय करना।
7. **बहुमानाचार**-ज्ञान का, ग्रन्थ का और पढ़ाने वालों का आदर करना, आगम को उच्चासन पर रख कर मङ्गलाचरण[1] पूर्वक पढ़ना, समाप्ति पर भी भक्ति (जिनवाणी स्तुति) करना आदि।
8. **अनिह्नवाचार**-जिस शास्त्र से, या जिन गुरु से आगम का ज्ञान हुआ है, उनके नाम को नहीं छुपाना। जैसे -किसी अल्प ज्ञानी गुरु से पढ़े तो उनका नाम लेने से हमारा महत्त्व घट जाएगा। इससे विशेष ज्ञानी या प्रसिद्ध गुरु का नाम लेना यह निह्नव है और ऐसा नहीं करना अनिह्नवाचार है। (मूला., गा. 269)

11. स्वाध्याय से कौन-कौन से लाभ हैं ?

स्वाध्याय करने से प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं-

1. असंख्यात गुणी कर्मों की निर्जरा होती है।
2. ज्ञान एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है।
3. सहनशीलता आती है।
4. अज्ञान का नाश होता है।
5. उलझे हुए प्रश्न सुलझ जाते हैं।
6. मन की चंचलता दूर होती है।

1. मङ्गलाचरण तीन बार किया जाता है- आदि, मध्य और अन्त में।

7. ज्ञान से चारित्र की प्राप्ति होती है, प्रत्याख्यान नामक 9 वें पूर्व का अध्ययन तीर्थङ्कर के पादमूल में वर्ष पृथक्त्व तक करता है तब उसे परिहार विशुद्धि संयम की प्राप्ति होती है।
8. देवों द्वारा पूजा भी होती है। जब आचार्य श्री धरसेनजी ने मुनि नरवाहनजी और मुनि सुबुद्धिजी को अध्ययन कराया, अध्ययन की समाप्ति पर भूत जाति के देवों ने पूजन की थी और एक महाराज की दंत पंक्ति सीधी की थी। इसके कारण उनका मुनि भूतबलीजी एवं मुनि पुष्पदन्तजी नाम आचार्य श्री धरसेनजी ने रखा था।
9. ज्ञान के कारण ही मुनि माघनन्दिजी का स्थितिकरण हुआ था। अर्थात् वह पुनः मुनि बन गए।
10. तत्त्व चिंतन के लिए नए-नए विषय प्राप्त होते हैं।
11. शास्त्र स्वाध्याय सुनते-सुनते अजैन बालक क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी बने थे।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. व्यवहार स्वाध्याय के पाँच भेद हैं।
2. पढ़ाने वाले की परीक्षा लेने के लिए पूछना पृच्छना स्वाध्याय है।
3. लौकिक उपन्यास, पत्रिका पढ़ना वाचना स्वाध्याय है।
4. औदारिक शरीर एवं वैक्रियिक शरीर वाले स्वाध्याय करते हैं।
5. वैक्रियिक शरीर वाले धर्मोपदेश देते हैं।
6. मुनि ने मच्छर को धर्मोपदेश दिया तो मच्छर ने काटना बंद कर दिया।
7. नारकी दूसरे नारकी को धर्मोपदेश दे सकता है।
8. स्वाध्याय से निर्जरा होती है।
9. स्वाध्याय से ज्ञान घटता है।
10. स्वाध्याय करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
11. ज्ञान से चारित्र की प्राप्ति होती है।
12. अज्ञान के कारण माघनंदिजी का स्थितिकरण हुआ था।

अन्यत्र खोजिए -

1. स्वाध्याय दिन में कितने बार करना चाहिए ?
2. श्रावकों के लिए कौन से ग्रन्थों का स्वाध्याय करने का निषेध है ?
3. अकाल में सिद्धान्त ग्रन्थों का स्वाध्याय करने से क्या होता है ?
4. स्वाध्याय करते समय क्या-क्या नहीं करना चाहिए ?
5. कौन से आचार्य ने अन्तरंग परिग्रह चौदहवें गुणस्थान तक, किस रूप में माना है ?